

देश-देशांतर/द बगि पकिचर: भारत-आसयान संबंधों के 25 वर्ष

संदर्भ व पृष्ठभूमि

25-26 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित आसयान-भारत मैत्री रजत जयंती शिखर सम्मेलन (ASEAN-India Commemorative Summit) और राजपथ पर भारतीय गणतंत्र की 69वीं वर्षगांठ पर आयोजित परेड में आसयान के सभी 10 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की बतौर मुख्य अतिथि मौजूदगी।

कहाँ तक पहुँची 25 साल की दोस्ती?

- **सम्मेलन की थीम:** साझा मूल्य, सामान्य नयति (Shared Values, Common Destiny)
- **सम्मेलन का महत्त्व:** एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (भारत) और आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण ब्लॉक (आसयान देशों) के बीच साझा सहयोग को बढ़ावा

दोनों पक्षों के बीच सहयोग के प्रमुख बटु

प्लान ऑफ एक्शन

आसयान-भारत के बीच में शांति, सहयोग व साझा समृद्धि को बढ़ाने के लिये दीर्घकालिक आसयान-भारत की भागीदारी के लिये रोडमैप पर हस्ताक्षर किये गए थे। इसका तीसरा संस्करण (2016-20) अगस्त 2015 में हुई आसयान-भारत के वदेश मंत्रियों की बैठक में अपनाया गया था। इस समयावधि में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की गई है।

(टीम दृष्टि इनपुट)

- भारत के प्रमुख साझेदार और बाजार, जैसे-आसयान एवं पूर्वी एशिया से लेकर उत्तरी अमेरिका तक पूरव की ओर अवस्थिति हैं।
- भूमि एवं समुद्री मार्गों से जुड़े दक्षिण-पूरव एशिया और आसयान के साथ 'लुक ईस्ट' नीति एवं पछिले तीन वर्षों से 'एक्ट ईस्ट' नीतिके तहत द्विपक्षीय संबंध और मज़बूत होते जा रहे हैं।
- आसयान और भारत रणनीतिक साझेदार हैं और 30 व्यवस्थाओं के ज़रिये व्यापक आधार वाली आपसी साझेदारी को आगे बढ़ा रहे हैं।
- आसयान के प्रत्येक सदस्य देश के साथ भारत की राजनयिक, आर्थिक और सुरक्षा साझेदारी बढ़ रही है।

आर्थिक सहयोग

- आसयान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है और भारत आसयान का सातवां सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है।
- आसयान के साथ भारत का व्यापार 2016-17 में बढ़कर 70 अरब डॉलर का हो गया है, जबकि 2015-16 में यह 65 अरब डॉलर था।
- संगापुर की अगुवाई में आसयान भारत का प्रमुख नविश स्रोत है। आसयान देशों व भारत के बीच वर्ष 2000 से नविश प्रवाह 12.5 प्रतिशत बढ़ चुका है।
- अप्रैल 2000 से अगस्त 2017 के बीच आसयान से भारत में नविश प्रवाह 514.73 बिलियन डॉलर था।
- भारत द्वारा वदेश में किये जाने वाले नविश का 20 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा आसयान के देशों में जाता है।
- इस क्षेत्र में भारत द्वारा किये गए मुक्त व्यापार समझौते अपनी तरह के सबसे पुराने समझौते हैं और किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में सबसे महत्त्वकांक्षी हैं।

सहयोग बढ़ाने के 3 प्रमुख क्षेत्र

आसयान और भारत की क्षेत्र में शांति और सुरक्षा में समान हितों को साझा करते हुए खुला, संतुलित एवं समावेशी क्षेत्रीय संरचना है। भारत हृदि महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक बड़े समुद्री क्षेत्रों के साथ रणनीतिक रूप से अवस्थित है। ये समुद्री क्षेत्र आसयान के कई सदस्य देशों के लिये महत्त्वपूर्ण व्यापार के रास्ते भी हैं।

1. आसयान और भारत को व्यापार एवं नविश को बढ़ावा देने के लिये प्रयासों को बढ़ाना होगा क्योंकि इन दोनों के दोहन की अपार संभावनाएँ हैं। एआईएफटीए से आगे निकलकर एक उच्च गुणवत्तापूर्ण क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी के निर्माण के लिये काम करना होगा। इससे एक समेकित

एशियाई बाजार का निर्माण होगा, जिसमें दुनिया की लगभग आधी आबादी और दुनिया की जीडीपी का एक-तह्रिई हिस्सा रहित होगा। नयिमों एवं वनियिमनों को युक्तसिंगत बनाने से दोनों पक्षों में नविशों को प्रोत्साहन मल्लिगा, भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीतल को बढावा मल्लिगा और कषेत्र में 'मेड इन इंडिया' का नरियात सुगम होगा।

2. भारत और आसयान को बेहतर भूमल, वायु एवं सामुदरकल कनेक्टवलतल से काफल ललभ मल्ल सकता है। त्रसलतरीय भारत-म्यांमार-थाइलैंड राजमार्ग के वसलतार के काम को गतल देने की आवश्यकता है। आसयान-भारत वायु परवलहन समझौते को शीघ्र अंजाम देने से भौतकल कनेक्टवलतल को बढावा मल्लिगा। इससे कषेत्र में लोगों का आवागमन बढने के साथ ही दोनों पक्षों के परवलहनों हेतु नए और उभरते बाज़ारों, वशलषकर व्यवसाय, नवलश और पर्यटन को भी बढावा मल्लिगा।
3. डलजलटल कनेक्टवलतल सहयोग का एक अनूय महत्त्वपूर्ण कषेत्र है और यह भवषल्य में दोनों पक्षों के लोगों के बीच आपसी संपर्क को आकार दे सकता है। जैसे कल भारत की 'आधार योजना' भारत-आसयान फनलटैक प्लेटफॉर्म को समनवतल करने या ई-पेमेंट प्रणालयों को कनेक्ट करने के लयल कई नए अवसरों का सृजन कर सकतल है।

सहयोग के अनूय कषेत्र

- आसयान-भारत संबंध 2012 में दोनों पक्षों के संबंधों की 20वीं वरषगाँठ पर रणनीतकल साझेदारी में बदल गए।
- दोनों पक्षों के बीच एक वारषकल लीडर्स समटल एवं सात मंत्रसलतरीय वारताओं सहलतल लगभग 30 मंच हैं।
- भारत सकरयलतापूर्वक आसयान कषेत्रीय फोरम, आसयान रक्षा मंत्रयों की बैठक एवं पूर्व एशया समटल सहलतल आसयान के नेतृत्व वाले मंचों में भाग लेता है।
- भारत का वारषकल ट्रैक 1.5 कार्यक्रम दल्लल संवाद आसयान-भारत के बीच राजनीतकल-सुरक्षा और आर्थकल मुद्दों पर चर्चा के लयल है।
- आसयान-भारत सामरकल साझेदारी से संबंधतल वभलनलन मुद्दों पर कार्यशालाओं, सेमलनारों और सम्मेलनों का आयोजन करने के लयल आसयान-भारत केंद्र की स्थापना की गई है।
- अंतरकष प्रौद्योगकल और मैरीटाइम सुरक्षा को और पुख्ता करने के लयल तथा आतंकवाद नरलधक उपायों के लयल भी भारत-आसयान के बीच सहयोग कयल जाता है।
- आसयान-भारत के बीच वज्जान और प्रौद्योगकल वकलस कोष, आसयान-भारत सहयोग नधल, आसयान-भारत ग्रीन कोष, आसयान-भारत एसएंडटी वकलस फंड के साथ-साथ राजनीतकल सुरक्षा सहयोग, सामाजकल-सांस्कृतकल कषेत्र में भी सहयोग कयल जाता है।
- आसयान-भारत मल्लकर कृषल, वज्जान और प्रौद्योगकल, अंतरकष, पर्यावरण और जलवायु परवलरतन, मानव संसाधन वकलस, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन आदल कषेत्रों में वभलनलन परयोजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से सहयोग कर रहे हैं। (टीम वृष्ट ईनपुट)

कनेक्टवलतल

- आसयान-भारत कनेक्टवलतल दोनों पक्षों के लयल बेहद महत्त्वपूर्ण है। आसयान संपर्क समनवय समतल का तीसरा संवाद साझेदार भारत 2013 में बना था।
- आसयान-भारत के बीच समुदरी और हवाई कषेत्रों में संपर्क का तेज़ी से वसलतार हुआ है।
- दोनों पक्ष प्राथमकलता के आधार पर महादवीपीय दकषणल-पूर्व एशया में राजमार्गों का वसलतार कर रहे हैं।
- भारत-म्यांमार-थाइलैंड त्रपलकषीय राजमार्ग को आपस में जोड़ने वाली सड़कों के साथ यात्रयों व माल परवलहन को जोड़ने के लयल काम चल रहा है।
- इसके परणामस्वरूप दकषणल-पूर्व एशया में पर्यटन के सबसे तेज़ी से बढते स्रोतों में अब भारत भी शामिल हो गया है।

आसयान के 10 देश और भारत

थाइलैंड, वयतनाम, इंडोनेशया, मलेशया, फललपलस, सगलपुर, म्यांमार, कंबोडया, लाओस और ब्रूनेई आसयान के 10 सदस्य देश हैं।

सगलपुर भारत और आसयान के बीच एक पुल की तरह है। आज यह पूर्व के साथ हमारे प्रवेश का मुख्य मार्ग है, यह हमारा प्रमुख आर्थकल साझेदार है और महत्त्वपूर्ण सामरकल सहयोगी भी है जसकल झलक कई कषेत्रीय और वैशवकल मंचों में हमारी सदस्यता से परलकषतल होती है। सगलपुर और भारत सामरकल सहयोगी भी हैं। हमारी आर्थकल साझेदारी में दोनों देशों की प्राथमकलताओं का प्रत्येक कषेत्र शामिल है। सगलपुर भारत का प्रमुख गंतव्य और नवलश स्रोत है। आज हज़ारों भारतीय कंपनयों सगलपुर में पंजीकृत हैं।

थाइलैंड आसयान देशों में से एक अहम व्यापारकल साझेदार के रूप में उभर कर सामने आया है और भारत में नवलश करने वाले महत्त्वपूर्ण देशों में से एक है। भारत और थाइलैंड के बीच दवलपलकषीय व्यापार पछले दशक में बढकर दोगुने से अधकल हो गया है। दोनों देशों के संबंध कई कषेत्रों में वसलतृत रूप से वकलसतल हुए हैं और दकषणल और दकषणल-पूर्व को जोड़ने वाले महत्त्वपूर्ण कषेत्रीय साझेदार हैं। हम आसयान, पूर्वी एशया शखर सम्मेलन और बमलस्टेक (बहु-कषेत्रीय तकनीकी और आर्थकल सहयोग के लयल बंगाल की खाड़ी के देशों के संगठन) में घनषलठ सहयोगी तो हैं ही, मीकांग-गंगा सहयोग, एशया सहयोग वारता और हनलद महासागर के तटवर्ती देशों के संगठन में भी साझेदार हैं।

वयतनाम के साथ भारत के संबंध बढते हुए आर्थकल और वाणज्यकल संपर्कों को रेखांकतल करते हैं। भारत और वयतनाम के बीच दवलपलकषीय व्यापार दस वरषों में करीब 10 गुना बढ गया है। रक्षा सहयोग भारत और वयतनाम के बीच सामरकल साझेदारी के महत्त्वपूर्ण आधार स्तंभ के रूप में उभरकर सामने आया है। वज्जान और तकनीक दोनों देशों के बीच सहयोग का एक अनूय महत्त्वपूर्ण कषेत्र है।

म्यांमार के साथ भारत की 1600 कललोमीटर से ज़्यादा लंबी साझा ज़मीनी और समुदरी सीमा है। पछले दशक में हमारा व्यापार दोगुने से भी अधकल बढ गया है। हमारे नवलश संबंध भी काफल सुदृढ हुए हैं। म्यांमार के साथ भारत के संबंधों में वकलस संबंधी सहयोग की महत्त्वपूर्ण भूमकल है। फललहाल भारत की ओर से सहायता राशल 1.73 अरब डालर से अधकल है। भारत का पारदरशी वकलस सहयोग म्यांमार की राष्टरीय प्राथमकलताओं के अनुसार है जसकल आसयान से जुड़ने के मास्टर प्लान यानी वृहद योजना के साथ पूरा तालमेल है।

फलीपींस और भारत दोनों सेवा के क्षेत्र में मज़बूत हैं और सबसे ऊँची विकास दर वाले दुनिया के प्रमुख देशों में शामिल हैं। व्यापार और कारोबार की क्षमताओं की वजह से दोनों देशों में अनेक संभावनाएँ हैं। समावेशी विकास और भ्रष्टाचार से संघर्ष के बारे में दोनों देश एक राय हैं। भारत यूनीवर्सल आईडी कार्ड, वित्तीय समावेशन, बैंकिंग को सबकी पहुँच के दायरे में लाने, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और नकदी वहीन लेन-देन को बढ़ावा देने के बारे में अपने अनुभवों को फलीपींस के साथ साझा कर रहा है। सभी को वाजिबि दामों पर दवाएँ उपलब्ध कराने की फलीपींस सरकार की प्राथमिकता में भी भारत ने सहयोग का प्रस्ताव दिया है। आतंकवाद की चुनौती से नबिटने के लिये भी दोनों देश आपसी सहयोग बढ़ा रहे हैं।

मलेशिया और भारत सामरिक साझेदार हैं और कई बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय मंचों में भी सहयोगी हैं। आसियान में मलेशिया भारत के तीसरे सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में उभर कर सामने आया है और भारत में निवेश करने वाला आसियान देशों में से महत्वपूर्ण निवेशक है। पछिले दस वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार दोगुने से ज्यादा बढ़ गया है। 2011 से भारत और मलेशिया के बीच वसितृत द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग समझौता जारी है। यह समझौता इस अर्थ में अनोखा है कि इसने वास्तु व्यापार के क्षेत्र में आसियान से कही अधिक वचनबद्धता वाला प्रस्ताव किया और सेवाओं के विनियम में डब्ल्यूटीओ से भी अधिक के प्रस्ताव किये। दोनों देशों के बीच दोहरे कराधान को रोकने के संशोधित समझौते पर मई 2012 में दस्तखत किये गए और सीमा शुल्क के क्षेत्र में सहयोग के लिये 2013 में समझौता हुआ जिसने हमारे व्यापार और निवेश सहयोग को और भी सुवधाजनक बना दिया है।

ब्रूनेई और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार पछिले दशक में दोगुने से ज्यादा हुआ है। भारत और ब्रूनेई संयुक्त राष्ट्र, गुटनरिपेक्ष आंदोलन, राष्ट्रमंडल, एआरएफ आर्द संगठनों के साझा सदस्य हैं। विकासशील देशों के रूप में मज़बूत पारस्परिक और सांस्कृतिक संबंधों के साथ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय वषियों पर ब्रूनेई और भारत के विचारों में काफी हद तक समानता है।

लाओस और भारत के बीच संबंध व्यापक रूप से कई क्षेत्रों में विकसित हुए हैं। भारत लाओस के वदियुत वतिरण एवं कृषि क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। दोनों देश अनेक बहुपक्षीय और क्षेत्रीय मंचों पर सहयोग करते हैं। यद्यपि दोनों देशों के बीच होने वाला कारोबार संभावनाओं से कम है, लेकिन लाओस से भारत में नरियात को प्रोत्साहित करने के लिये भारत ने उसे ड्यूटी फ्री टैरिफ प्रेफरेंस स्कीम की सुवधा दी हुई है।

इंडोनेशिया और भारत के बीच हृदि महासागर में केवल 90 समुद्री मील की दूरी है और रणनीतिक सहयोगियों के रूप में दोनों देशों का सहयोग राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा एवं सुरक्षा, सांस्कृतिक एवं लोगों के बीच संबंधों जैसे सभी क्षेत्रों में फैला हुआ है। आसियान में इंडोनेशिया हमारा लगातार सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी बना हुआ है। भारत और इंडोनेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार पछिले 10 वर्षों में 2.5 गुना बढ़ा है।

कंबोडिया आसियान और अन्य वैश्विक मंचों पर भारत का एक महत्वपूर्ण सहयोगी और साझेदार है। 1981 में खमेर रूज की सत्ता समाप्त होने के बाद भारत पहला ऐसा देश था जिसने वहाँ की नई सरकार को मान्यता दी थी। पेरिस शांति समझौता एवं 1991 में इसको पूर्ण किये जाने में भी भारत शामिल था। दोनों देशों ने अपने सहयोग का संस्थागत क्षमता विकास, मानव संसाधन विकास, विकासात्मक एवं सामाजिक परियोजनाएँ, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सैन्य सहयोग, पर्यटन और लोगों के बीच संबंधों जैसे विविध क्षेत्रों में वसितार किया है।

(टीम दृष्टाइनपुट)

निष्कर्ष: भारत व आसियान के बीच बहुपक्षीय संबंधों का विकास देश में आर्थिक उदारीकरण के बाद से शुरू हुआ। इसी कड़ी के 25 साल पूरे होने के मौके पर आसियान-भारत मैत्री रजत जयंती शिखर सम्मेलन में दोनों पक्षों ने भविष्य की यात्रा के लिये अपने संकल्प को दोहराया। भारत और आसियान की अर्थव्यवस्था साथ मलिकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकती है। भारत एवं आसियान देशों के संबंध किसी भी प्रकार की प्रतिसिपर्द्धा एवं दावेदारी से मुक्त हैं और दोनों के पास भविष्य के लिये एक साझा दृष्टिकोण है, जो समावेशन एवं एकीकरण, सभी राष्ट्रों की सार्वभौमिक समानता तथा व्यापार और पारस्परिक संबंधों के लिये स्वतंत्र एवं खुले मार्गों के समर्थन की प्रतबिद्धता पर आधारित है। भारत के विकास की यात्रा में देश का उत्तर-पूर्व क्षेत्र भी प्रगति के पथ पर है और आसियान देशों के साथ कनेक्टिविटी से इस प्रगति को और गति मिलेगी।